भारत में सुशासन के समझ चुनौतियाँ

शोध छात्रा
सुप्रसन्ना

परिचय

आज के समय में राज्य की अवधारणा पुलिस राज्य के बजाए कल्याणकारी राज्य की है। अतः राज्य की जनता के कल्याण के लिए समाज के समुचित विकास के लिए, उसकी शांति एवं समृद्धि के लिए सुशासन पहली शर्त है। सुशासन के अन्तर्गत बहुत सी चीजे आती है। जिसमें योजना, सही प्रबंधन, अच्छा बजट, कानून का शासन, सदाचार, पारदर्शिता, जवाबदेही आदि है। इसके विपरीत प्रशासन में लोगों की कम भागीदारी, जंगल राज, पारदर्शिता का अभाव, भ्रष्टाचार का बोल वाला, प्रशासन में लोगों की कम भागीदारी ये सभी दुःशासन के लक्षण है।

अतः हम कह सकते है कि "सुशासन" की अवधारणा की प्रासंगिकता इसलिए है क्योंकि कुशासन के लक्षण आसानी से सभी जगह मिल जाते हैं। आज अधिकतर देशों में सत्ता का दुरूप्योग, घोटाले, भ्रष्ट्राचार और सार्वजनिक धन को हड़पने की प्रवृति कायम है। ऐसे उदाहरण बहुत से है। अतः सुशासन की अवधारणा ऐसी प्रवृतियों को रोकने हेतु एक निदान के रूप में हो सकता है। [9]

रामराज्य या आदर्शराज की स्थापना करना सदियों से शासकों की कल्पना में रहा है। देखा जाए तो सुशासन की खोज एक अंतहीन प्रक्रिया है, राज्य का रूप, संरचना और प्रकार किसी भी तरह का क्यों न रहा हो, राज्य के जन्म से ही शासकों के लिए सुशासन एक चुनौती रहा है।[२]

सुशासन की अवधारणा

शासन तब सु अर्थात् अच्छा होता है। जब कोई राज्य अपने नागरिको के विकास तथा कल्याण के लिए प्रभावी तरीके से अपने उत्तरदायित्व का सम्पादन करें। वास्तव में सुशासन लोक तांत्रिक ढ़ाचे में कार्यरत कार्यकुशल एवं प्रभावी प्रशासन का नाम है। निःसन्देह सुशासन, नागरिकोन्मुख, मित्रवत, संवेदनशील तथा उत्तरदायी प्रशासन के लक्ष्यों को लेकर चलनेवाली अवधारणा है।

सामान्यतया शासन से मतलब है निर्णय निर्माण और उसका कार्यान्वयन। शासन शब्द सरकार की अपेक्षाअधिक व्यापक होता है। सरकार का अर्थ एक मशीनरी और संस्थानों की व्यवस्था। जिसके द्वारा सत्ता का उपयोग राजनीतिक समुदाय के आंतरिक एवं बाध्य हितों को पूर्ण करना है। दूसरी ओर शासन का अभिप्राय एक प्रक्रिया तथा परिणाम से है, जिससे समाज के हित के लिए साधिकार निर्णय लिया जाता है। [३]

आज के समय में प्रशासन को उत्तरदायी बनाना परम आवश्यक है, प्रशासन व्यवस्था तथा प्रक्रियों दोनो को ही उत्तरदायी बनाया जाए। प्रशासन सेसंबंधित सभी तंत्र चुस्त रहने पर ही सुशासन की कल्पना की जा सकती है।[४]

भारतीय परिपेक्ष्य में सुशासन के धटक

सुशासन का सिद्धांत तभी बोधगम्य होगा। जब उसे समय के परिवर्तित रूप के अनुसार देखा जाए। भारत में प्राचीन काल से ही अभिशासन को वर्णित किया जाता रहा है। वैदिक साहित्य में सु-शासन के विषय में उत्प्रेरक विचारभरे पड़े हैं। "सर्वे भवंतु सुखिन" एवं बसुधैव कुटंबकम एवं असतो मा सदगमय" जैसे विचार सु-शासन के बारे में कुछ ऐसे आरम्भिक कथन है जो लोक आचरण की नैतिक आधार रचना पेश करते हैं। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में इस बात पर बार-बार जोर दिया गया है। कि राजा की खुशी प्रजा की खुशी में निहित है।

सुशासन संबंधी आकांक्षाएँ भारतीय संविधान की प्रस्तावना में उल्लखित है। यह प्रस्तावना शासन के लिए एक दार्शनिक आधार प्रस्तुत करती है जिसके तहत गणतांत्रिक लोक तंत्र, न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व सुनिश्चित करने के लिए जनता को संप्रभू घोषित किया गया है। मूल भूत अधिकारों के बारे में एक अलग भाग (भाग ३) है और भाग ४ में राज्य के नीति-निर्देशक तत्वों की चर्चा है।

देखा जाए तो सभी देशों के लिए सुशासन के मायनें एक से नही है। भारत के परिपेक्ष्य में सुशासन अपरिहार्य उदेश्य सामाजिक अवसरो का विस्तार और गरीबी उन्मूल होना चाहिए। संक्षेप में उत्तम शासन से अभिप्राय है न्याय सशक्तीकरण, रोजगार एवं क्षमतापूर्ण सेवा-प्रदायन सुनिशचित करना। सुशासन की अवधारणा जीवन स्वतंत्रता एवं खुशी प्राप्त करने के लोगों के अधिकार से जुड़ी हुई है। किसी भी लोकतंत्र में यह तभी पूरा हो सकता है जब राज्य में कानून का शासन हो। कानून के शासन से आशय है कि कोई भी व्यक्ति कानून से बड़ा नहीं है। भारतीय संवैधानिक प्रणाली में प्रत्येक व्यक्ति को कानून के सामने समानता एवं संरक्षण का अधिकार प्राप्त है।

उत्तम शासन का उदेश्य एक ऐसा माहौल उपलब्ध करना है, जिसमें सभी नागरिक चाहे वे किसी भी श्रेणी, जाति और लिंग के हो अपनी पूर्ण क्षमता से विकास कर सके। सुशासन का उदेश्य नागरिकों को प्रभावी, सुचारू और समतापूर्ण सार्वजनिक सेवाएं प्रदान करना है।[५] संक्षेप में सुशासन भ्रष्टाचार एवं लालफिताशाही से मुक्त कर प्रशासन को चुस्त एवं स्मार्ट बनाता है।

सुशासन के समक्ष चुनौतियां

किसी लोकतांत्रिक प्रणाली के लिए सुशासन या उत्तम शासन की स्थापना अपने आप में बहुत महत्वपूर्ण है। साथ ही उत्तम शासन के मार्ग में बाधाएँ भी बहुत है। भारत में सुशासन की प्राप्ति के लिए सम्भावनाएं बेहतर है। दूसरी ओर चुनौतियां भी उतनी ही संख्या

में मौजूद है। सुशासन के विचार को कार्यरूप देने के समझ गरीबी निरक्षतरा, क्षेत्रियतावाद, नक्सलवाद, आतंकवाद इत्यादि कुछ प्रबल चुनौतियाँ है। इन चुनौतियों के साथ-साथ राजनीति का अपराधिकरण और भ्रष्टाचार सुशासन स्थापना के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा है।[६]

भारत में व्याप्त उच्च स्तरीय भ्रष्टाचार को अभिशासन के रास्ते की सबसे प्रमुख बाधाएं के रूप में देखा गया है। यद्यपि मनुष्य मनुष्य की लालची स्वभाव ने इस समस्या को और बढ़ाया है पर भारत में इस समस्या के लिए जिन कारकों ने सहायता पहुंचाई है वे हैं सरचनात्मक प्रलोभन एवं भ्रष्टाचारियों को दंण्डित करने की कमजोर कानून प्रणाली।

वस्तुतः राजनीति में बढ़ता धनबल, विचारधाराओं का लोप और प्रशासन में व्याप्त भ्रष्टाचार प्रशासन के समक्ष सबसे बड़ी बाधा है। कल्याणकारी राज्य के कारण प्रशासन के कार्यभार में स्वभाविक रूप से विस्तार हुआ है, इसमें सभी नागरिकों, सामाजिक संस्थाओं और संगठनों, सरकार के तीनों अंग-विधायिका, कार्यपालिका एवं न्यायपालिका, मिडिया, उद्यमियों, सभी राजनीतिक दलों आदि को अपनी भागीदारी निभाने का अवसर प्राप्त हुआ है।

अतः हम कह सकते है कि सद-शासन एक ऐसी अवधारणा है जो सरकार की तीन शाखाओं-कार्यकारी, विधायी तथा न्यायिक के दक्षतापूर्ण कार्यो के सम्पादन पर निर्भर होती है, आधुनिक युग में सामान्यतः यह देखा जा रहा है कि सत्ता से जुड़े लोग जनता की सेवा की जगह निजी हितों की पूर्ति की भावना से प्रभावित हो चुकें है। किसी भी प्रकार धनप्राप्ति

तथा रक्त संबंधों को आगे बढ़ाना उनका एकमात्र लक्ष्य बन चुका है। अपने इन लक्ष्यों की पूर्ति के लिए उचित या अनुचित का विचार करना उनके लिए मायने नहीं रखता है।[७]

निष्कर्ष :

आज के समय में प्रशासक हो या राजनेता उनके जीवन में धन का बहुत अधिक महत्त्व है। राजनेताओं के लिए चुनाव पूर्व धन बहुत महत्त्व रखता है।[८]इसलिए प्रशासन, दुःशासन की दिशा में अग्रसर हो रहा है। दुःशासन को सुशासन के रूप में देखना है तो प्रक्रियात्मक लोकतंत्र से स्वायत लोकतंत्र की दिशा में परिवर्तित होना होगा।

भारत में सुशासन को स्थापित करने के लिए यह जरूरी है कि प्रशासनिक राजनीतिक एवं न्यायिक सुधार के काम जल्द से हाथ में लिए जाएँ। "ई शासन" भारत में सुशासन का अग्रदूत बनकर उभर रहा है। भारत में "सूचना का अधिकार अधिनियम" ने सु-शासन की दिशा में कीर्तिमान स्थापित किए है। सु-शासन को संतुलित शासन का औजार बनाने के लिए यह अनिवार्य है कि एक ओर सरकारी एवं गैर सरकारी संगठन और दूसरी ओर सहकारी संगठन आपसी तालमेल के साथ लोक दायित्व की दशिा में अपनी-अपनी भूमिका को जवाबदेही के साथ निभाये।

ग्रन्थ सूचि :-

(१) डॉ० बी० एल० फड़िया, "लोक प्रशासन" साहित्य भवन आगरा, २०वां संस्करण २०१२, पृ०-६०६

(२) डॉ० अमरेश्वर अवस्थी एवं डॉ० श्री राम माहेश्वरी, "लोक प्रशासन" लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा, २०१०, पृष्ठ-५४

(३) R.C. Sekhar : Ethics- The Other Name of Good Governance, I J P A, 1998 P-335

(4) S.N. Yadav, Indu Baghel, "Good Governance, and Human, Devlopment" Jnanda Prakashan (P&D) New Delhi, 2009, P-2

(५) डॉ० बी० एल० फड़िया, "लोक प्रशासन", साहित्य भवन आगरा, २० वां संस्करण, २०११, पृ०-६८८-६८६

(६) मनोज सिन्हा, "प्रशासन एवं लोकनीति", ओरियंट ब्लैकस्वान, नई दिल्ली, पहला संस्करण, २०१०, पृ०-१६५

(७) डॉ० अमरेश्वर अवस्थी एवं डॉ० श्री राम माहेश्वरी, "लोक प्रशासन," लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा, २०१०, पृ०- ५७६

(८) डॉ० बिहारी प्रसाद अग्रवाल, "भारतीय राजनीति में भ्रष्टाचार", राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, २००५, पृ०-४